परंपरा और आधुनिकता के बीच की टकराहट

"आधुनिकता से है ज्ञान,
परंपरा है हमारी पहचान।"

इस काल के समाज में परंपराओं का पालन करना बहुत अधिक महत्वपूर्ण हो गया है। परंपराओं को परिवार के पूर्वजों के द्वारा बनाया गया होता है। आधुनिक रूप से देखा जाय तो यह कुछ पुरानी सोच वाले कार्य होते है। इन कार्यों को इस समय के लोग पालन करना अना पसंद नहीं करते है। आज के समय में यह देखा जा रहा है कि आधुनिक कार्यों और चीजो को उतना महत्व नहीं मिल पा रहा है, बल्कि उसे टुकराया जा रहा है।

परपरा को हम तीन श्रेणी में विभाजित कर सकते है:-

1. धर्म की परंपरा
2. समाज की परंपरा
3. राज्य की परंपरा

धर्म की परंपरा

धर्म हर एक व्यक्ति का विश्वास होता है। हर धर्म की अलग-अलग परंपराएं होती है, जैसे हिंदू धर्म में हमारे केरल राज्य में अय्यप्पा मंदिर जाकर दर्शन करना शुभ माना जाता है और मुसलमान धर्म में काबा जाकर हज्ज करना अनिवार्य माना जाता है। इन सब परंपराओं को धर्म विश्वासी पालन करते है।

समाज की परंपरा

सामाजिक परंपरा वह होती जो समाज के लोगों गुणदाई एवं संतोष प्रदान करता है। "बुरे कामों से दूर और एक कदम अच्छाई की ओर।" इन परंपराओ को समाज के विकसित होने के लिए होती है।

राज्य की परंपरा

हर एक राज्य की अपनी एक अंदाज़ होती अतिथीयो का स्वागत करने का। जैसे कि गुजरात में जब हमारे माननीय प्रधानमंत्री गए तो उनको वहाँ की पगड़ी पहनाकर, तिलक करते हुए स्वागत किया गया था।

"अतिथी देवो भव:।"

आधुनिक काल की विशेषताए

आधुनिक काल के लोगों की सोच इस समय के लोगों की सोच से बहुत अलग है। इस समय के लोग कुछ अलग और हटकर सोचते एवं करते है, जबकि आधुनिक काल में किसी भी प्रकार की आडंभर नहीं हुआ करती थी। हर चीज सरल तरीके से किया जाता था। कोई दिखावा नहीं, किसी प्रकार की भी अधिक चाहत नहीं थी। आधुनिक लोग सही मायने में सरल जीवन शैली का प्रयोग करते थे। उन दिनो मोह-माया के लिए कही भी किसी में भी जगह नहीं हुआ करती थी।

आधुनिक जीवन को महात्मा गांधी जी ने सही तरीके से जिया है। नंगे पॉव, सफेद धोती में उनकी वेश-भूषा हुआ करती थी। अपने हर काम खुद ही करते थे, कोई काम करने के लिए किसी भी चीज का सहायता नहीं लेते थे। आधुनिक काल के लोगो में श्रेष्टतम उदाहरण महात्मा गांधी जी है।

एक पेड़ की दो शाखाओ के बीच की टकराहट

आधुनिकता और परंपरा एक ही पेड़ की दो शाखाएं है अर्थात्, आम एक रास्ते से थे लेकिन दो अलग रास्ते में विभाजित हो गए है। आधुनिकता में सरलता है लेकिन परंपराओं को परंपरागत रूप से आडंभर प्रस्तुत किया जा रहा है।

देखा जाए तो आधुनिक बातों एवं कार्यों को दुकराया जा रहा है। यह इसलिए हो रहा है क्योंकि आज के समय के लोगों नई सोच पुराने समय के पुराने सोच से मेल नही हो पा रहा है। आधुनिक काल की वस्त्र धारण शैली को देखा जाए तो हमें समाज में आएगी। धोती-कुर्ता अब शर्ट-जीन्स में बदल गई। ~~साड़ी~~ साड़ी पहले गूँगट के साथ पहनी जाती थी अभी वैसा कुछ नहीं है।

अतः मेरे सोच के हिसाब से हमें दोनों में से उनकी अच्छाइयो को प्राप्त करना चाहिए। आधुनिकता की अपनी एक गुण है और परंपराओ की भी अपनी एक गुण है।

"इन दोनों को नहीं है टुकराना,
यही है हमारी शुक्राना।"